(8)

Lecture Series. No:- 54.

On line class.
Date - 26/5/2020
Time - 10:10:10

Topic.

1. existence of God.

Dr. Surita Kumari
Depart. of philosophy.
B.A part - I
Paper - (5.)
A.N.D. College Shahpur patory, Samastipur.

Ans.:->

न्याय दर्शन ईश्वरवादी दर्शन है। वह दर्शन को सत्ता में ~~विश्वाव~~ विश्वास करता है। प्रमाणशास्त्र के बाद न्याय दर्शन का महत्वपूर्ण अंग ईश्वर विचार है। न्याय के ईश्वर संबंधी विचार भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

न्याय ने ईश्वर को एक आत्मा कहा है। चैतन्य से युक्त है। न्याय के अनुसार आत्मा दो प्रकार की होती है। :-> (i) जीवात्मा और (ii) परमात्मा। ईश्वर जीवात्मा से पूर्णतः भिन्न है। ईश्वर का ज्ञान अनित्य आंशिक और सीमित है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

ईश्वर सभी प्रकार के पूर्णता से युक्त है। जबकि जीवात्मा अपूर्ण। ईश्वर न तो 'बद्ध' है और न तो 'मुक्त'। बंधन और मुक्ति का प्रश्न

जीवात्मा के कर्मों का मूल्यांकन कर अपने को पिता के तुल्य सिद्ध करता है। ईश्वर जीवात्मा के प्रति वही व्यवहार रखता है जैसा व्यवहार एक पिता अपने प्रिय पुत्र के प्रति रखता है। ईश्वर का स्रष्टा, पालक और संहारक है।

वह विश्व की सृष्टि शून्य से नहीं करता। विश्व की सृष्टि, पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि के परमाणुओं तथा आकाश, दिक्, काल मन

और आत्माओं के द्वारा करता है। हालांकि ईश्वर की सृष्टि अनेक द्रव्यों के माध्यम से करता है फिर भी ईश्वर की शक्ति

P.T.O.

Scanned with CamScanner

सीमित नहीं हो पाती परमाणु गति होती है। परमाणुओं में गति का संचालन ईश्वर के द्वारा होता है। परमाणु के अभाव में सृष्टि की कल्पना भी असंभव है।

यदि ईश्वर विश्व को धारण नहीं करें तो विश्व का अंत हो जायेगा। विश्व को धारण करने की शक्ति सिर्फ ईश्वर में ही है।

क्योंकि परमाणु और अदृष्ट अचेतन होने के कारण विश्व को धारण करने में असमर्थ है। ईश्वर को संपूर्ण विश्व का ज्ञान है।

ईश्वर की इच्छा बगैर एक पत्ता भी नहीं गिर सकता। जिस प्रकार मिट्टी के घड़े का निर्माण और नाश होता है, उसी प्रकार विश्व का भी नाश होता है। END